P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-4* ISSUE-12* March- 2020
E: ISSN NO.: 2455-0817 Remarking An Analisation

वर्तमान दौर में गुरु नानक वाणी की प्रासंगिकता

The Relevance of Guru Nanak Vani in the Present Era

Paper Submission: 15/03/2020, Date of Acceptance: 28/03/2020, Date of Publication:30/3/2020

ऋषिपाल
एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष,
हिन्दी विभाग,
बाबू अनन्त राम जनता
कॉलेज,
कौल, कैथल, हरियाणा, भारत

सारांश

वर्तमान दौर में बाजारीकरण एवं भौतिकतावाद ने मनुष्य को विश्वकेन्द्रित कर महामण्डित कर दिया है, इसलिए बाजारवादी संस्कृति के दुष्प्रभावों ने उसके व्यक्तित्व को बौना बना दिया है। वर्तमान व्यवस्था ने उसे इस प्रकार का वातावरण प्रदान किया है, जहाँ हर वस्तु व व्यक्ति बिकाऊ हैं। ऐसे वातावरण में लोगों के मन में असन्तोष पैदा होना स्वाभाविक है। वर्तमान दौर में व्यक्ति, समाज, देश और विश्व के सामने बहुत सी चुनौतियाँ दिखाई देती हैं। आज का मनुष्य स्वार्थी एवं आत्मकेन्द्रित हो गया है। विश्व बाजारवादी संस्कृति ने हमारे मानवीय मूल्यों एवं नैतिक आदर्शों को नष्ट कर दिया है। आज का मानव हिंसा एवं भ्रष्टाचार की ओर अग्रसर होता जा रहा है। समस्त मानव जाति सांस्कृतिक प्रदूषण के गर्त में फंसती दिखाई दे रही है। इसलिए मानवता दिग्भ्रमित एवं पीड़ित नज़र आती है। वैसे भी कोई भी राष्ट्र अपनी लोक–सांस्कृतिक धरोहर को नष्ट कर अपने अस्तित्व को कायम नहीं रख सकता।

In the present era, marketization and materialism have made the world centered and glorified, so the ill effects of marketist culture have dwarfed his personality. The present system has given him this kind of environment, where every thing and person is for sale. In such an environment, it is natural for people to develop discontent. In the present era, many challenges are seen in front of the individual, society, country and the world. Today's man has become selfish and self-centered. The world marketist culture has destroyed our human values and moral ideals. Today's human is moving towards violence and corruption. All mankind is seen trapped in the trough of cultural pollution. Therefore, humanity seems confused and afflicted. Anyway, no nation can maintain its existence by destroying its folk-cultural heritage.

मुख्य शब्द : बाजारीकरण, भौतिकतावाद, गुरु नानक वाणी, भारतीय संस्कृति।
Marketization, Materialism, Guru Nanak Vani, Indian Culture.

प्रस्तावना

गुरु नानक वाणी वर्तमान दौर में नितान्त आवश्यक है। नानक जी की वाणी का उद्देश्य भी समाज में समरसता का है। वैसे तो हमारे देश में प्राचीनकाल से ही ऋषि–मुनियों, साधु–सन्तों, नाथों, भिक्षुओं, सूफियों, पीर–पैगम्बरों की परम्परा चली आ रही है। यह परम्परा वर्तमान दौर में भी विद्यमान है। अगर हम इतिहास पर दृष्टि डालें, तो युगों–युगों से हमारे देश में आक्रमणकारियों, अरबों, तुर्कों, मुगलों एवं अंग्रेजों ने समाज के राजनैतिक, धार्मिक व सामाजिक सरोकारों पर अपना प्रभाव डाला है। समाज की परिस्थितियों को ध्यान में रखकर ही कवि अपने युग की भावनाओं, विचारों और आदर्शों को जनता के सामने रखता है। भारत देश की पवित्र धरती पर अनेक संत–महात्मा अवतरित हुए, जिन्होंने देश को नैतिक एवं सामाजिक मूल्यों की दृष्टि से सुरक्षित रखने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। ये सन्त चाहे निर्गुणवादी हों, चाहे सगुणवादी हों, इन सभी ने भारतीय लोक–सांस्कृतिक धरोहर के रक्षार्थ अपनी वाणी को निराकार ब्रह्म से जोड़ा व अनेक छन्दों, दोहों, साखियों, पदों आदि के माध्यम से साहित्यिक क्षेत्र को समृद्ध किया। अगर हम भारतीय समाज के मध्यकाल को देखें तो उस समय वर्गवाद, छुआछूत, नैतिक मूल्यों का हनन, साम्प्रदायिकता, नारी शोषण, रूढियों, कुप्रथाओं आदि का बोलबाला था। सन् 1500 ई॰ के आसपास दिल्ली साम्राज्य के पतन का दौर चल रहा था। हिन्दू और मुसलमान दोनों के ही धार्मिक ठेकेदार जनता को लूट रहे थे। पाखण्डी

साधु–संन्यासी, उलेमा और औलिया उन्हें मूर्ख बनाने में लगे थे। ऐसे घोर कलियुग में अलौकिक अवतार गुरुनानक देव जी का पर्दापण हुआ। सम्वत् 1526 (15 अप्रैल, सन् 1469) राय भोई की तलवंडी (जो आप जी के नाम से ननकाना साहिब प्रसिद्ध है) में हुआ। ऐसा लगता मानो जगत में अज्ञानता से जो पापों की घटा छाई हुई थी, वह सूर्य रुपी गुरु अवतार के प्रकट होने से छंट गई और ज्ञान का उजाला सारे संसार में फैल गया। गुरु नानक देव जी ने न केवल भारत का ही भ्रमण किया बल्कि अनेक देशों का भ्रमण करते हुए मक्का–मदीना भी गये। उन्होंने तत्कालीन समस्याओं का समाधान अपनी वाणी के द्वारा किया। वर्तमान दौर में भी नानक की वाणी जनमानस का कण्ठहार बनी हुई है तथा लोगों के मन में धैर्य, संतोष, सांत्वना एवं खुशी प्रदान करती है।

गुरु नानक देव जी कहते थे कि सच्चे मन से भगवान का भजन करो, संयमित जीवन बिताओ, मेहनत से जीविकोपार्जन करो और मधुर व परहितकारी वचन बोलो। नानक जी कहते थे कि शरीरधारी का नाम स्मरण नहीं करना चाहिए क्योंकि ईश्वर अदृश्य है, निराकार है। वे हिन्दू और मुसलमानों में कोई अन्तर नहीं मानते थे। उनकी वाणी ने हिन्दी साहित्य को न केवल समृद्ध किया बल्कि जीवन के उच्च आदर्शों को साहित्य में स्थापित भी किया। यह सत्य है कि साहित्य केवल मानव–जीवन का प्रतिबिम्ब ही नहीं करता, बल्कि वह हमारी मानवता की रक्षा और उसको प्रोत्साहित करता है। गुरु नानक देव जी की वाणी में मानवता के उन्नयन की ही पुकार है। उनके साहित्यिक प्रतिमान ईश्वरीय रूप में मानव के प्रतिष्ठापक कहे जा सकते हैं। हमेशा से ही साहित्य और जीवन का अन्तरंग सम्बन्ध रहा है। डॉ॰ नगेन्द्र ने इस सम्बन्ध को दो रूपों में माना है – ''एक क्रिया के रूप में और दूसरा प्रतिक्रिया रूप में। क्रियारूप रूप में साहित्य जीवन की अभिव्यक्ति है और प्रतिक्रिया रूप में वह जीवन का निर्माता और पोषक है।''[1] डॉ॰ नामवर के अनुसार, ''साहित्य सत्य का उद्घाटन करता है।''[2] यदि समाज की यह माँग है कि साहित्य किसी बेहतर संसार की परिकल्पना दे तो साहित्य को उन अंधेरों, जटिलताओं, संश्लिष्टताओं, आयामों और स्तरों से उलझना पड़ेगा, जिनका समाज विरोध करता है। रचना दूसरों के चाहे हुए हथियारों से नहीं लड़ सकती। युद्ध वही सफल होते हैं जो अपनी जमीन पर अपने हथियारों से लड़े जाते हैं और साहित्य भी इसका अपवाद नहीं है।[3]

गुरु नानक देव जी का आगमन ऐसे काल में हुआ जब देश घोर संकट के दौर से गुजर रहा था। धर्म के नाम पर हिन्दू और मुसलमानों में परस्पर दूरियाँ बढ़ती जा रहीं थीं। गुरु नानक देव जी ने न केवल वर्ग–विहीन समाज का स्वप्न देखा बल्कि उसे पूरा भी किया। न केवल गुरु नानक देव जी ने बल्कि सभी सन्तों ने समानता को समाज के धरातल पर ला उतारा।[4] सभी सन्तों ने भक्ति को प्रेम–भक्ति कहा है। वे मानते थे कि प्रेम भक्ति अनमोल है। प्रेम भक्ति की बराबरी न योग कर सकता है, न ज्ञान। भक्ति के बिना सारी साधनाएं व्यर्थ हैं। जिस तरह पानी में नमक मिलकर एक रूप हो जाता है, ठीक उसी प्रकार भक्ति द्वारा भक्त और भगवान में अभेद स्थापित होता है।[5] गुरु नानक देव जी ने अपनी वाणी से आडम्बरों एवं पाखण्डों का विरोध किया। वे मानते हैं कि आडम्बर एवं पाखण्डों से न तो भक्ति ही सम्भव है और न ही हम भगवान की प्राप्ति कर सकते हैं। वे कहते हैं – ''पाखंडि भगति न होवई, परब्रह्म न पाइआ जाई।''[6]

गुरु नानक देव जी मूर्ति पूजा का विरोध करते हैं। उनके अनुसार भगवान तो कण–कण में विद्यमान है। भगवान सर्वव्यापक और सर्वान्तर्यामी है। वे सम्पूर्ण आकाश मण्डल को पूजा का थाल मानते हैं और सूर्य व चन्द्रमा को पूजा के लिए दीपक मान लेते हैं। नक्षत्र असंख्य मोतियों के समान हो जाते हैं। मलयानिल भगवान की पूजा के लिए धूप है और पवन उसकी चंवर डुलाता है। इस प्रकार उन्होंने भावात्मक आरती की कल्पना की है – ''गगन में थालु रवि चन्द्र दीपक बने, तारिका मंडल मनक मोती, धूप मलआनलो पवणु चवरो करे, सगल बनराई फुलंत जोती।''[7] गुरु नानक देव जी ने भाग्य की बात करते हुए कहा कि – ''जो प्रभु इच्छा होती है, वह होकर रहेगा। प्रारब्ध को कोई मिटा नहीं सकता।'' मृत्यु के उपरान्त जब मनुष्य ईश्वर की दरगाह में जाएगा, तब उसकी जाति नहीं पूछी जाएगी बल्कि उसके कर्म ही देखे जाएंगे। उन्होंने हिन्दू और मुसलमानों दोनों के आडम्बरों एवं पाखण्डों का खण्डन किया है। उन्होंने स्वयं प्रत्यक्ष रूप से देखा कि दोनों कुमार्गी हैं। वे दोनों धर्म के अनुयायी तो बनते हैं, लेकिन धर्म के नाम पर हिंसा करते हैं। नमाज पढ़ने वालों और जनेऊ धारण करने वालों के बारे में वे कहते हैं कि – ''माणस खाणे करहिं निवाज, छुरी बगाइन तिन गलि ताग।''[8]

योगियों को समझाते हुए नानक जी जोर देकर कहते हैं कि आडम्बर मत करो योगी बनने का, बल्कि अपनी आत्मा योगी बननी चाहिए। वे आध्यात्मिक कर्म करने पर बल देते हैं। मनुष्य के मुद्रा पहनने से अच्छा है कि वह अपने मन में सन्तोष धारण कर लें। झोली पास रखने से तो अच्छा अपने सम्मान, इज्जत व मान को हम सुरक्षित रख लें।

शरीर पर भस्म लगाना, कंथा धारण करना आदि आडम्बरों का वे विरोध करते हैं। वे जोर देकर कहते हैं कि मन व शरीर को कामलिप्त न होने दें। हाथ में माला व डंडा रखने से अच्छा हम भगवान के नाम का स्मरण प्रेम व विश्वास से कर सकते हैं। वे कहते हैं – मुद्रा संतोखु सरमु पतु झोली, धिआन की करहि विभूति। खिंथा कालु कुआरी काइआ जुगति डंडा परतीति।[9] सन्त कवियों की तरह ही गुरु की महत्ता को दर्शाते हुए नानक जी ने कहा कि हम चाहे जितनी भी वेद व पुराण की पुस्तकों को पढ़ लें और लोगों को सुना भी दें, लेकिन सच्चे गुरु के बिना उनके स्वयं के हृदय रूपी कपाट नहीं खुलते – ''बांचहि पुस्तक वेद पुराना, इक वहै सुनै सुनावै काना, अजगर कपाट कहौ क्यू खुले, बिन सत गुरु तत न पाइआ।''[10]

अवतारवाद का भी गुरु नानक देव जी ने विरोध किया है। अवतारवाद के विरोध का विवेचन करते हुए डॉ॰ पिताम्बर दत्त बड़थ्वाल लिखते हैं – ''अवतारवाद विरोध का एक प्रधान कारण यह भी हो सकता है कि

उनके द्वारा नर पूजा का विधान हो जाने के कारण धर्म में पाखण्ड घुसने का मार्ग मिल जाता है।[11] भाग्य की रेखा कोई मिटा नहीं सकता। रावण बहुत ज्ञानी थे। राम ने उनका वध कर दिया। लेकिन राम के मन में सीता के लिए दुख था। रावण की मृत्यु का कारण राम नहीं, परमात्मा है। सीता के विरह का दुख राम को ज्यादा था इसलिए राम भी अपनी भाग्य रेखा नहीं मिटा सके और रावण भी। गुरु नानक देव जी कहते हैं – ''मन महिं झूरे, रामचन्द्र सीता लछमनु जोगु। हणवंत नू अराधिया, आइआ करि संजोगु। भूला देतु न समझई, तिनि प्रभु करि काम। नानक बेपरवाह सो किरतु न मिटई राम।''[12]

गुरु नानक देव जी का खण्डन भावुकता के आधार पर नहीं बल्कि बुद्धि की ठोस आधार–भूमि पर आधारित है। वे कहते हैं कि, ''ऐ योगी, माला तिलक या कंठी धारण करना वैराग्य का लक्षण नहीं है। तुम अंगों में विभूति मलकर पाखण्ड करते हो।[13] प्रभु के नाम का एक कण भी मनुष्य के लिए महत्त्व रखता है – ''तीखा तप इदआ दतु दान, जे को पावे तिल का मान। सुणिया मणिया मन कीता भाऊ, अन्तरगति तीरथि मलि नाऊ।''[14]

गुरु नानक जी ने अनेक बार अपनी वाणी के माध्यम से बहुदेव वाद का विरोध किया है। वे मानते हैं कि ईश्वर एक ही है – साहिब मेरा एकु है अवरु नहीं भाई।[15] साहिब मेरा एको है, एको है भाई, एको है।[16]

गुरु नानक देव जी ने हिन्दू व मुसलमानों के ढोंगी अनुयायियों को झूठा सिद्ध करते हुए कहा है कि भूखा मुल्ला मस्जिद में रह कर ढोंग करता है और उसे ही अपना घर मान लेता है। दूसरी ओर निखट्टू जोगी अपने कान फडवा लेते हैं, कुछ फक्कड़ बन कर जाति रहित होने का ढोंग करते हैं व दर–दर भीख मांगते हैं।[17] मौखिक ज्ञान की भी गुरु नानक देव जी ने निंदा की है – ''जगु कउआ मुखि चंचु गिआनु। अंतरि लोभ झूठ अभिमानु।''[18]

मध्यकाल में विदेशी शासकों ने इस्लाम की संकीर्ण धार्मिकता एवं सामूहिक साम्प्रदायिकता से भारतीय धार्मिक एवं सामाजिक मूल्यों को विश्रृंखलित कर दिया था। उनका समाज में एक बार फिर उन्नयन करने वाले मध्यकालीन सन्त ही थे।[19] गुरु नानक देव जी का जातिवाद के भेद को दूर करने में अटूट विश्वास था। गुरु नानक देव जी के सम्बन्ध में डॉ॰ धर्मपाल मैनी ने लिखा है, ''उन्होंने सभी बाह्याडम्बरों एवं औपचारिकताओं का खण्डन किया और स्वतः कोई ऐसे औपचारिक सम्बन्ध नहीं रखे जिन्हें अपनाने में किसी भी मानव को कष्ट हो या वे किसी धर्म की मान्यताओं के प्रतिकूल हों। इसलिए उनका धर्म मानव धर्म बनकर विकसित हुआ। उन्होंने हिन्दुओं और मुसलमानों के धार्मिक वैमनस्य को भी दूर कर सामाजिक एकता स्थापित करने का प्रयत्न किया।[20] गुरु नानक देव जी कहते हैं कि, ''मनुष्य मात्र में परमात्मा की ज्योति को ही समझने का प्रयत्न करो। जाति–पाति की इस तुच्छ उलझन में मत पड़ो। यह भली प्रकार जान लो कि वर्ण–व्यवस्था के पहले इस प्रकार की बात नहीं थी।[21] समस्त सन्तों ने मानव को समान समझा है। संत चाहते थे कि 'स्व' और 'पर' के स्वार्थपरक विचारों को त्यागकर समस्त संसार के लोग आध्यात्मिक भ्रातृभाव मे जुड़ जाएं। गुरु नानक देव जी समस्त मानवता को एक समान मानते हैं। अगर मनुष्य यह सोच ले कि हम एक ही पंथ के पथिक हैं तो हम मन को ही नहीं जगत को भी जीत सकते हैं। वे कहते हैं – ''आई पंथी सगल जमाति मनै जीते, जगु जीत आदेश तिसे आदेसु।''[22]

समत्व की भावना के बारे में गुरु नानक देव जी उपदेश देते हुए कहते हैं कि मनुष्य ही परमात्मा है। मनुष्य मात्र में विद्यमान ईश्वर की ज्योति को देखने की हमें कोशिश करनी चाहिए। जाति–पाति के भेदभाव को तज कर मानव एक–दूसरे से प्रेम करें। वे कहते हैं कि– जाणहु जोति न पूछहु जाति, आगे जाति न है।[23]

उपरोक्त विवेचन के आधार पर सारांश के रूप में हम कह सकते हैं कि गुरु नानक देव जी की वाणी अपने युग में अत्यन्त प्रासंगिक थी। उस युग में सामाजिक व्यवस्था का मेरूदण्ड वर्ण व्यवस्था थी और इस वर्ण व्यवस्था का पोषण धर्म के द्वारा हो रहा था। समस्त सामाजिक, राजनीतिक निर्णयों का आधार धर्मशास्त्र था। लेकिन देश की साधारण जनता का एक बहुत बड़ा हिस्सा किसी भी प्रकार के धार्मिक अधिकार से वंचित था। वेद, शास्त्र, पुराण आदि धार्मिक ग्रन्थों का पठन–पाठन उनके लिए वर्जित था। ऐसी स्थिति में निर्गुणोपासना का मार्ग प्रस्तुत कर संतों ने इन उत्पीड़ित, दलित लोगों के लिए धर्म और उपासना का द्वार खोल दिया। अपने इस रूप के कारण संतों की निर्गुणोपासना अपने युग के लिए जितनी प्रासंगिक थी, उतनी ही आज भी है।[24] आज समाज में सामाजिक सरोकारों का पतन हो रहा है। राजनीतिक कुटिल चालों से आम जन दुखी एवं त्रस्त है। स्वार्थ की राजनीति से प्रेरित सभी सामाजिक निर्णय लिए जाते हैं। हमारे संविधान में सभी को समान अधिकार दिए गए हैं। लेकिन फिर भी समाज में नित प्रतिदिन हिंसा हो रही है।

हम प्रतिदिन देश में राजनीतिक, सामाजिक व धार्मिक मूल्यों के पतन एवं विघटन के दृश्यों को देख रहे हैं। देश की बहुत ज्यादा आबादी आज भी जाति के नाम पर, तो कभी गरीबी के नाम पर, तो कभी अशिक्षा के कारण या अन्य अनेक कारणों से उन्हें समानता व स्वतन्त्रता के अधिकारों से वंचित रखा जा रहा है। संतों ने आज से पांच–छः सौ वर्ष पूर्व अनेक बार धार्मिक मंचों से मानव मात्र की समानता, स्वतन्त्रता और भाई–चारे की जोर–शोर से आवाज उठाई थी व उसके लिए वैचारिक संघर्ष भी किया था। इसलिए समसामयिक स्थितियों में उनकी वाणी आज भी उतनी ही प्रासंगिक है। आज हमारे देश में पुनः धर्म के नाम पर हिंसा हो रही है। गुरु नानक देव जी की नज़रों में धरती पर सब जीव ईश्वर का रूप हैं। उन्होंने अपनी मुखवाणी 'जपुजी साहिब' में कहा है कि 'नानक उत्तम नीच न कोई' अर्थात भगवान सब जीवों को समान मानते हैं। वे मानते हैं कि ईश्वर ही हमारा सर्वस्व है। वही हमें पैदा करता है, वही हमारी रक्षा करता है। भगवान ने सभी का समानता से पालन–पोषण किया है – ''नीचा अंदर नीच जात, नीची हूँ अति नीच। नानक तिन के संगी साथ, वडिया सिऊ किया रीस।''

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत शोधपत्र का उद्देश्य वर्तमान समय में गुरु नानक वाणी की प्रासंगिकता का अध्ययन करना है।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः गुरु नानक की वाणी आज के समाज में जाति–पाति के भेदभाव के लिए प्रासंगिक ही नहीं प्रेरक भी है। उन्होंने समस्त मानव को एक ही जाति का माना है। ऊंच–नीच का उनके विचारों में कोई स्थान नहीं। मनुष्य के कर्मों का लेखा–जोखा ही भगवान के दरबार में पढ़ा जाता है। आज के सन्दर्भ में उनकी वाणी में आडम्बर, अलगाववाद, हिंसा, जाति–पाति , ऊच–नीच, वर्ग–भेद, क्षेत्रवाद, तंत्र–मंत्र व छुआछूत आदि के विरोध की प्रासंगिकता निसन्देह सटीक है। गुरु नानक देव जी को न केवल हिन्दू अपना गुरु मानते थे बल्कि मुसलमान भी उनको अपने पीर के रूप में सम्मान देते थे। गुरु नानक देव जी ने सभी लोगों को समान समझ कर 'गुरु का लंगर' आरम्भ किया था, जो एक स्थान पर पंक्ति में बैठकर मिल–जुल कर भोजन ग्रहण करने की परम्परा है। गरु नानक देव जी ने समूची मानवजाति को सच्चाई के रास्ते पर चलने का भी संदेश दिया है। उपरोक्त विवेचन के आधार पर हम कह सकते हैं कि आज के दौर में गुरु नानक देव जी की वाणी निश्चित ही लोगों के मन में संतोष एवं शांति प्रदान करती दिखाई पड़ती है। आज के समाज की अनेक विसंगतियों का समाधान नानक जी की वाणी द्वारा होता दिखाई पड़ता है। उनकी वाणी मानव मूल्यों का मंगल कोष सिद्ध करती हुई दिखाई पड़ती है। गुरु नानक देव जी की वाणी आज के दौर में विज्ञान एवं साहित्य, मशीनरी एवं मनुष्य के बीच सुमेल करने में अपनी महत्ती भूमिका प्रदान करती हुई भी दिखाई देती है। इसलिए व्यक्ति, समाज, देश व विश्व के सामने जो चुनौतियाँ हैं, गुरु नानक देव जी की वाणी उन्हें समझने, सुलझाने को सक्षम एवं सार्थक सिद्ध होती दिखाई पड़ती है। उनकी वाणी आज भी उतनी ही प्रासंगिक है, जितनी कल थी। अतः हमें कल भी उसकी प्रासंगिकता क्षीण होती नज़र नहीं आती।

अंत टिप्पणी

1. *डॉ॰ नगेन्द्र, आस्था के चरण, पृ. 186*
2. *डॉ॰ नामवर सिंह, इतिहास और आलोचना, पृ. 17*
3. *डॉ॰ अमर सिंह वधान, भाषा, साहित्य और संस्कृति, पृ॰ 117*
4. *रवीन्द्र कुमार सिंह, संतकाव्य की सामाजिक प्रासंकिता, पृ॰ 163*
5. *डॉ॰ राजदेव सिंह, संतों का भक्तियोग, पृ॰ 165*
6. *श्री गुरु ग्रन्थ साहिब (महला 3), पृ॰ 846*
7. *सन्त सुधासार, खण्ड 1, पृ॰ 239*
8. *श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, पृ॰ 471*
9. *श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, महला 1, पृ॰ 06*
10. *वही, पृ॰ 647*
11. *डॉ॰ पीताम्बर दत बड़थ्वाल, हिन्दी काव्य में निर्गुण सम्प्रदाय, पृ॰ 221*
12. *श्री गुरु ग्रंथ साहिब, महला 1, पृ॰ 350*
13. *वही, पृ॰ 903*
14. *श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पृ॰ 4*
15. *श्री गुरु ग्रंथ साहिब, महला, पृ॰ 420*
16. *वही, पृ॰ 350*
17. *श्री गुरु ग्रंथ साहिब, महला 1*
18. *वही, पृ॰ 832*
19. *रविन्द्र कुमार सिंह, संत काव्य की सामाजिक प्रासंगिकता, पृ॰ 145*
20. *गुरु नानक की सामाजिक देन, डॉ॰ धर्मपाल मैनी, गुरु नानक और उनका काव्य, सं॰ महिपाल सिंह, पृ॰ 83–84 में संगृहीत लेख।*
21. *श्री गुरु ग्रंथ साहिब, महला 02, पृ॰ 349*
22. *श्री गुरु ग्रंथ साहिब, महला 02, पृ॰ 469*
23. *श्री गुरु ग्रंथ साहिब, महला 01, पृ॰ 469*
24. *रविन्द्र कुमार सिंह, संत काव्य की सामाजिक प्रासंगिकता, पृ॰ 14*